प्राकृतिक खेती के प्रमुख उत्पाद एवं विधियाँ

जीवामृत

आवश्यक सामग्री– 10 किलो ताजा गोबर, 10 ली. गोमूत्र, 50 ग्राम चूना, 2 किलो गुड़, 2 किलो बेसन, 1 किलो मिट्टी और 200 ली.पानी

विधि –

1. सभी सामग्री को 200 लीटर पानी में मिलाकर अच्छी तरह से हिलाना चाहिए ।
2. मिश्रण को छायादार स्थान पर 48 घंटे के लिए किण्वन के लिए रख दें।
3. मिश्रण को दिन में दो बार सुबह और शाम को लकड़ी की छड़ से चलाना चाहिए।
4. तैयार जीवामृत 200 लीटर / एकड़ सिंचाई के पानी के माध्यम से फसलो में उपयोग करें।

बीजामृत

आवश्यक सामग्री– 5 किग्रा गाय का गोबर, 5 ली.गौमूत्र, 50 ग्राम चूना, 50 ग्राम मिट्टी, 20 ली.पानी, (100 किलो बीज के लिए)

विधि –

1. 5 किग्रा गाय के गोबर को एक कपड़े में लें और कपड़े को 20 लीटर पानी में 12 घंटे के लिए लटका दें ।
2. साथ ही एक लीटर पानी लें और उसमें 50 ग्राम चूना मिलाकर रातभर के लिए रख दें।
3. अगली सुबह, बंडल को पानी में तीन बार लगातार निचोड़ें, ताकि गाय के गोबर के महत्वपूर्ण तत्व पानी में मिल जाएं।
4. 50 ग्राम मिट्टी की मात्रा को लगभग 1 लीटर पानी में मिश्रण करके अच्छी तरह से चलाएं।
5. मिश्रण में देसी गाय का 5 लीटर मूत्र और चूना पानी मिलाएं और अच्छी तरह से चलाएं।
6. किसी भी फसल के बीज में बीजामृत मिलाकर उन्हें हाथ से मिलाकर, अच्छी तरह सुखाकर बुवाई के लिए प्रयोग करें।

नीमास्त्र

आवश्यक सामग्री– 200 लीटर पानी, 2 किलो गाय का गोबर, 10 लीटर गोमूत्र, 10 किलो नीम के पत्तों का बारीक पेस्ट।

विधि –

1. एक ड्रम में 200 लीटर पानी लें और उसमें 10 लीटर गोमूत्र डालें। फिर देशी गाय का 2 किलो गोबर डालें। अब, 10 किलो नीम के पत्ते या बीज का बारीक पेस्ट बनाकर मिलाएं।
2. फिर इसे एक लंबी छड़ी के साथ दायीं ओर चलाएं और इसे एक बोरी से ढक दें। इसे छाया में रखें क्योंकि यह धूप या बारिश के संपर्क में नहीं आना चाहिए। घोल को हर सुबह और शाम को दायी दिशा में चलाएं।
3. 48 घंटे के बाद, यह उपयोग के लिए तैयार हो जाता है। इसे 6 महीने तक उपयोग के लिए भंडारित किया जा सकता है ।
4. तैयार घोल को मलमल के कपड़े से छान लें और 10 लीटर नीमास्त्र को 200 लीटर पानी में मिलाकर फसलों पर छिड़काव करें।

ब्रह्मास्त्र

आवश्यक सामग्री– 20 लीटर गौमूत्र, नीम के 2 किलो पत्ते, करंज के 2 किलो पत्ते, शरीफे के 2 किलो पत्ते और धतुरे के 2 किलो पत्ते।

विधि –

1. एक बर्तन में 20 लीटर गौमूत्र ले एवं उपरोक्त सामग्री का पेस्ट बनाकर अच्छे से मिलाएं।
2. इसे धीमी आंच पर एक या दो उबाल आने तक उबालें। घड़ी की दिशा में चलाएं, इस के बाद बर्तन को एक ढक्कन से ढंक दें और उबलने दें।
3. दूसरा उबाल आने पर, उबालना बंद कर दें और इसे 48 घंटे के लिए ठंडा करने के लिए रख दें ताकि पत्तियों में मौजूद एल्कालॉएड गौमूत्र में मिल जाएं।
4. इसके बाद, एक मलमल के कपड़े का उपयोग कर मिश्रण को छान लें और 10 लीटर ब्रह्मास्त्र को 200 लीटर पानी में मिलाकर फसलों पर छिड़काव करें।

अग्नेयास्त्र

आवश्यक सामग्री- 20 लीटर गोमूत्र, 2 किलो नीम के पत्तों का पेस्ट, 500 ग्राम तंबाकू पाउडर, 500 ग्राम हरी मिर्च का पेस्ट, 250 ग्राम लहसुन का पेस्ट और 200 ग्राम हल्दी पाउडर

विधि –

1. एक कंटैनर में 20 लीटर गोमूत्र में उपरोक्त सामग्री मिलाएं। घोल को दायीं ओर चलाएं और इसे ढक्कन से ढक दें और झाग आने तक उबलने दें।
2. आग से हटाकर बर्तन को 48 घंटों के लिए ठंडा होने दें। इस किण्वन अवधि के दौरान अवयव को दिन में दो बार चलाएं।
3. मिश्रण को 48 घंटे के बाद मलमल के कपड़े से छान लें और 8 दिन के अंतराल पर फसलों पर छिड़काव करें।

पंचगव्य

आवश्यक सामग्री- गाय दूध 2 लीटर एवं दही 2 किग्रा, गौ-मूत्र 3 लीटर, गाय का घी- 1 किलो, गाय का ताजा गोबर 5 किलो, गुड 500 ग्राम, नारियल का पानी 3 लीटर एवं एक दर्जन पके हुए केले

विधि –

1. प्रथम दिन 5 कि.ग्रा. गोबर व 1.5 लीटर गोमूत्र में 1 किलो देशी घी अच्छी तरह मिलाकर प्लास्टिक के ड्रम में डाल दें।
2. अगले तीन दिन तक इसे रोज हाथ से हिलायें। अब चौथे दिन सारी सामग्री को आपस में मिलाकर ड्रम में डालकर ढक दें।
3. इस मिश्रण को 15 दिनों के लिए छाँव में रखना है और प्रतिदिन सुबह और शाम के समय अच्छी तरह लकड़ी से घोलना है। इसके बाद जब इसका खमीर बन जाय और खुशबू आने लगे तो समझ लें कि पंचगव्य तैयार है।
4. 19वें दिन पंचगव्य का घोल तैयार हो जायेगा अब इसे 10 ली. पानी में 250 ग्राम पंचगव्य मिलाकर फसलो में प्रयोग कर सकते हैं।